कौल-फैल-हाल

ब्रह्मवाणी श्री कुलजम स्वरूप में कौल-फैल-हाल इन तीन शब्दों का प्रयोग अनेक बार हुआ है तो सुन्दरसाथ जी-आइए देखते हैं श्री जी इन शब्दों के द्वारा सुन्दरसाथ को क्या सन्देश देना चाहते हैं। सर्वप्रथम हम 'कौल' शब्द का मंथन करते हैं - "कौल" का शाब्दिक अर्थ है - वचन - अर्थात् वचन का पालन करना - श्री मुख वाणी में इस शब्द का प्रयोग विशेषकर आतम के लिए ही किया गया परन्तु जीव का भी इस कौल शब्द से सम्बन्ध है वह इस प्रकार से - कि जीव को जब ८४ लाख योनियों के असहनीय कष्ट सहने के पश्चात मानव तन में आने का सुअवसर मिलता है तो वह पिछले जन्मों में किये गये बुरे कर्मों के पश्चाताप दिल में लेकर अब की बार अच्छे कर्म करने का कौल करता है क्योंकि उसे मानव तन की योनि में बुद्धि का एक विशेष उपहार भी मिला है।

परन्तु मृत्यु लोक में आकर मानव अपने पारिवारिक तथा सामाजिक दायित्व पूरे करने में इस कदर जुट जाता है कि अपने कल्याण के लिए कुछ भी सोचने-समझने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता। परन्तु व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा मोड़ अवश्य आता है जब उसे संसार का कोई भी क्रिया-कलाप मानसिक शान्ति प्रदान नहीं करता-किसी ऐसे ही पड़ाव पर व्यक्ति मन ही मन अखण्ड सुख पाने की कामना करता है - परन्तु वह नादान क्या जाने-कि अखण्ड सुखों की प्राप्ति के लिए तो उसे आनन्द के स्रोत से जुड़ना पड़ेगा - जब आनन्द यहां है ही नहीं तो उसे मिलेगा कैसे?

सृष्टि के आदिकाल से लेकर अब तक तो इश्क और आनन्द के स्रोत पारब्रह्म को कोई जानता ही नही था - परन्तु अब २८वे कलयुग के अन्तिम चरण में जब स्वयं पारब्रह्म अपनी आत्माओं के संग आये हैं तो प्रत्येक व्यक्ति जिसे उनके शुभागमन की सूचना मिल गई है उसे चाहिए कि वह पारब्रह्म से अपना सम्बन्ध सदा-सदा के लिए जोड़ ले। सम्पूर्ण सृष्टि का मालिक जिसे सत-चिद्-आनन्द के गुणों से परिपूर्ण होने के कारण सच्चिदानन्द कहा गया है - इश्क और आनन्द से भरपूर होने के कारण इश्क और आनन्द का सागर भी कहा गया है - इस सागर रूपी पारब्रह्म में बंद रूप से विलीन होने में ही जीव के आनन्द व प्रेम प्राप्त हो सकता है क्यों कि सागर की विशालता जब बूंद रूपी जीव को अपने में समेट लेती है तो बूंद भी सागर का स्वरूप हो जाती है और बूंद जब अपनी मैं को भूल कर सागर की विशाल मैं को अपना लेती है तो वह ही सागर का स्वरूप हो जाने के कारण आनन्द तथा प्रेम का स्वरूप हो जाती है।

यह तो हुआ सर्वसाधारण का कौल अब नजर डालते हैं ब्रह्म सृष्टि के कौल पर-ब्रह्मसृष्टि का कौल है सम्पूर्ण सृष्टि के मालिक पारब्रह्म को अंगना भाव से रिझाना - क्योंकि उस का मूल स्वरूप तो परमधाम में ही है वह अपने धनी से इश्क की शर्त लगाकर आई है कि मेरा इश्क आप से अधिक है। उसने अपने इश्क के बड़ा होने का बढ़-चढ़कर दावा लिया था अब वह धनी को ही

Nijanand App

नहीं, स्वयं को भी भूल गई है - अब जब स्वयं प्रियतम उसके द्वारा किये हुए कौल की याद दिला रहे हैं तो लाख प्रयास करने पर भी उसे याद नहीं आ रहे-परन्तु जब ये कौल उसे याद आ जायेंगे तो फैल-हाल आने में ज़रा भी देर नहीं लगेगी।

यह तो हुई साधारण कौल की बात जिसे श्री जी ने माया में भूली हुई आत्माओं की खातिर बेशक इलम के द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि को समझाई। परन्तु कौल-फैल-हाल ये तीनों शब्द ब्रह्म सृष्टि को समझाने के लिए हैं क्योंकि वही इन शब्दों में छिपे हुए मर्म को समझ सकती है - तो श्री जी ने फ़रमाया कि परमधाम में तो केवल रहनी ही रहनी है - माया में आत्माओं की फ़रामोशी दूर करने के लिए उनकी जागनी की तीन उतरोत्तर सीढ़ियां बताई। कौल, फैल, हाल - यह कौल शब्द जिसके शाब्दिक अर्थ से केवल कहनी का बोध होता है, है तो यह जुबां से कहा गया एक कथन ही - परन्तु यही कौल अपने प्रेक्टीकल रूप में फैल-हाल का स्वरूप भी ले लेता है। कौल का महत्व इस प्रकार से जाना जा सकता है कि यदि हमें पता ही न हो कि हमारे कार्यो की रूप रेखा क्या है तो उन कार्यो को करने से हमें क्या लाभ होने वाला है तो हम उन कार्यो को पूरा करने के लिए सीढ़ी दर सीढ़ी आगे बढ़ेंगे कैसे? कौल-फैल हमारी जागनी यात्रा की दो सीढ़ियां हैं परन्तु तीसरी सीढ़ी जिसे हाल कहा गया है वह कौल-फैल के परिणाम स्वरूप है या यों कहें कि जागनी यात्रा की अन्तिम सीढ़ी है - मंजिल है।

पहले कहा जा चुका है कि अच्छे करने के लिए ही जीव मानव योनि लेकर इस मृत्यु लोक में जन्म लेता है परन्तु मानव ने जो अपनी बुद्धि से कर्म बनाये उन्हें उचित-अनुचित बताकर इस संसार को उन कर्मो से बांध दिया-जबकि पारब्रह्म का इन कर्मो से कुछ भी लेना-देना नहीं है वे इस अठाइसवें कलयुग में आए हैं कर्मों के बन्धन में जकड़ी हुई दुनिया को इस बन्धन से छुटकारा दिला कर मुक्ति देने इस लिए उन के नाम, धाम-स्वरूप और लीला के विषय में जानना प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है - और तारतम के बिना पारबह्म के विषय में कुछ भी जानना असम्भव है इसलिए तारतम ही सृष्टि के प्रत्येक मानव का कौल है। तारतम की छः चौपाइयों में पारब्रह्म के सम्पूर्ण ज्ञान को गागर में सागर भरने की भांति सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के मालिक स्वयं लेकर आये हैं - यही तारतम ही वास्तविक ज्ञान है। क्योंकि ज्ञान की वास्तविक चा० है - केवल इसी ज्ञान के द्वारा ही जीव के प्रत्येक संशय को मिटाया जा सकता है इसलिए यही तो है समस्त सृष्टि का कौल! जिस ज्ञान के एक-एक शब्द में अनेक सुख छिपे हैं क्योंकि इन शब्दों के सार को अपने आचरण में ढ़ाल कर सदा-सदा के लिए आवागमन से छुटकारा प्राप्त होता है - और मिलता है अखण्ड सुख जिस की तलाश मनुष्य सदियों से करता आ रहा था परन्तु आतम इस कौल से आगे बढ़कर फ़ैल-हाल की ओर निरन्तर कदम बढ़ाती रहती है जब तक उसे उसकी मंजिल सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त नहीं होता।

प्यारे सुन्दरसाथ जी-जिस समय सतगुरू तारतम लेने वाले को तारतम की छः चौ० के सार से अवगत करवाकर उसका पालव धनी से बांध देते हैं उसी विशेष समय से व्यक्ति उस कौल से

Nijanand App

बंध जाता है जो उसे पारब्रह्म की कृपा दृष्टि के कारण प्राप्त हुआ। यदि तारतम लेने वाला इस कौल को निबाहता हुआ फैल हाल की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहा है तो यह कौल उस का 'सत्य कौल' कहलायेगा। क्योंकि इसी कौल ने उसके वास्तविक स्वरुप का बोध करवाकर उसे उसकी निसबत की खबर दी और निसबत की सूचना मिलते ही उसे अपने कौल की याद आई जो उसने परमधाम से उतरते समय अपने धनी से किया था। खिलवत वाणी की चौ० है -

"विचार देखो इप्तदाए से, ले अपना तारतम।"
अपन सोवत हैं नींद में, खेल खेलावत खसम।।

प्रक० ५/३८ खिलवत

और यदि तारतम लेने वाला आतम स्वरुप में नहीं है तो उसके लिए तारतम केवल कहनी बन कर रह जायेगा - जिसे व्यक्ति ने औपचारिकता वश ले तो लिया परन्तु मेहर के बिना कदम आगे बढ़ते नहीं! परन्तु पारब्रह्म से सम्बन्ध जुड़ना भी कोई साधारण बात नहीं है - सदा-सदा के लिए मुक्ति का द्वार खुल गया। सतगुरू ने तारतम देते समय जो वचन कहे थे वह आतम के लिए अनमोल निधि बन जाते हैं। 'ए सत वाणी मथ के, मैं लेऊ जो इनको सार' 'जब ए सुख अंग में आवही, तब छूट जाये विकार' तारतम में सतगुरु से जो कौल किया था कि वह आतम होने के नाते से सतगुरु के प्रत्येक वचन का पालन करेगी - इसी वाणी के श्रवण - मंथन से ही अपनी दिनचर्या आरम्भ करेगी। सतगुरु की दिलाई हुई इस शपथ के कारण आतम इस वाणी के मंथन का लाभ लेते हुए अपने विकार दूर करती जाती है और तारतम रूपी कौल की नाव के सहारे फैल-हाल की ओर निरन्तर अग्रसर रहती है।

तो सुन्दरसाथ जी - है तो यह तारतम केवल एक शपथ-जिसका जुबां से उच्चारण भर किया जाता है - इसलिए कहनी है - परन्तु यही शपथ अर्न्तमन को समय-समय पर कचोटती है इसलिए फैल-हाल की ओर कदम स्वयं ही बढ़ते जाते हैं और यह भी शतप्रतिशत सत्य है कि फैल-हाल की ओर कदम बढ़ाना हमारे अपने हाथ में नहीं है क्योंकि जिस क्षण सतगुरू आतम का पालव धनी से बांधते हैं - उसी विशेष समय से वह मेहर की छत्र-छाया के तले आ जाती है। यही कारण है कि सतगुरू का आर्शीवाद मिलते ही आतम अपना दामन धनी को थमा कर स्वयं को उनकी छत्रछाया में सुरक्षित समझने लगती है। माया में दुख आये अथवा सुख प्रत्येक परिस्थिति में आतम को लाभ ही होगा - यही है मेहर का रोल आतम के जीवन में -

परन्तु इस खेल में राज जी की मेहर का प्रभाव भी प्रत्येक पर अलग-अलग रंग दिखलाता है क्योंकि यह खेल है इस में सभी कुछ राज जी के हुकम से ही घटित हो रहा है इसलिए प्रत्येक आतम को मेहर के कारण सुखों की अनुभूतियां अलग-अलग प्रकार से हो रही हैं क्योंकि इस खेल में हांसी का सामान भी तो एकत्रित करना है।

Nijanand App

"धाम अंकुर एक बिध को, कई बिध कृपा केलि।
ए माफ़क कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि।।"

प्रक० ७६/१६ किरतन

यही कारण है कि माया में सब की करनी अलग-अलग प्रकार की हो गई है। राज जी पर अटल ईमान होते हुए भी वाणी के गुझ भेदों से हम सभी सुन्दरसाथ समान रूप से अवगत नहीं हो पाते। क्योंकि यह सब सीखने सिखलाने से प्राप्त नहीं होता-धनी जिसे चाहें जिस योग्य बना दें - वे चाहें तो वाणी चर्चा में कुशल बना दें वे चाहें तो अपनी मेहर का स्वरूप दिखलाने के लिए सुरीली आवाज़ के साथ-साथ राग-रागिनियों में भी कुशल बना दें। और जिसे चाहें सेवा और गरीबी का भाव देकर सुन्दरसाथ की सेवा में समर्पित कर दें।

'ए करो तौहकीक विचार के, जो होए अर्स उमत।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत।।'

५/३८ खिलवत"

प्यारे सुन्दरसाथ जी केहेनी-करनी तथा चलनी ये तीन प्रकार के चलन जो वाणी में दर्शाये गये हैं - हम सुन्दरसाथ कहनी से करनी तथा करनी से रहनी की ओर किस गति से कदम बढ़ाते हैं - इस पर ही हम सब सुन्दरसाथ का मूलाधार टिका हुआ है जिस प्रकार सीढ़ियां चढ़ते हुए हमारी निगाह सदैव अगली सीढ़ी पर होती है ठीक इसी प्रकार हमें भी कहनी से करनी तथा करनी से रहनी की ओर शीघ्रता से अग्रसर होना है। उदाहरण के लिए सीढ़ियां चढ़ते हुए यदि हम उसी सीढ़ी पर नज़र जमाये हुए आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे जिस पर हम खड़े हैं तो स्वाभाविक रूप से गिर पड़ेंगें अर्थात कहनी पर ही टिके हैं परन्तु बातें करते हैं रहनी की! कहनी ही कहनी पर टिके रहने के कारण हम शीघ्र ही अहंकार के गहरे सागर में डूब जायेंगे और इस मैं रूपी अहंकार में डूबने के पश्चात तो व्यक्ति का उबरना असंभव ही है।

इसके विपरीत यदि हम अपने वतन के आनन्द के परम लक्ष्य को दिल में लिये हुए हादी के कदमों पर कदम रखते हुए अग्रसर होंगे तो शीघ्रता से कहनी की करनी का समय आ जायेगा। वाणी में श्री जी ने फ़रमाया है 'करनी माफ़क कृपा, और कृपा माफ़क करनी' अर्थात यदि करनी के अनुसार कृपा होती है तो हमारी करनी भी कृपा के कारण बनती है - इस प्रकार ये दोनों करनी और कृपा एक दूसरे पर आधारित हैं। यदि हमारी करनी वाणी तथा बीतक के अनुकूल होगी तो धनी की मेहर भी बेशुमार होगी और जब मेहर बे हिसाब होगी तो करनी भी धनी की मेहर के कारण और अच्छी हो जायेगी। जब करनी पर धनी की मेहर का हिसाब नहीं है तो रहनी आने में भी विलम्ब क्यों होगा? क्योंकि हमारे द्वारा होने वाले काम जब आतम को लाभ पहुंचाने वाले होंगे तो वह समय भी आयेगा जब हमारी करनी मेहर की हो जायेगी। अब हमारा प्रत्येक अगला कदम कहनी तथा करनी में एकरूपता दर्शायेगा ऐसी अवस्था में कहनी भी मेहर की हो जायेगी। क्योंकि जो जुबां से

Nijanand App

निकलेगा वह भी तो धनी के प्रेम में डूबा होगा। जब कहनी भी धनी की हो गई और करनी भी धनी की हो गई तो कहनी की करनी और करनी की रहनी कैसे नहीं होगी? अर्थात कहनी-करनी और रहनी ये तीनों एक हो जायेंगी।

राज जी ने माया दिखलाने के लिए इन्द्रावती के हालात बदले और यही दशा हम सब सुन्दरसाथ की भी है। सर्वप्रथम कहनी दिखलाई जिसे रात की बात कहा क्योंकि सतगुरू को सांसारिक तन समझा-भीतर बैठे धनी की पहचान नहीं की इसलिए सांसारिक औपचारिकताओं के द्वारा सतगुरू की याद को बनाये रखना चाहा यही कारण है असफ़लता मिली क्योंकि कहनी की करनी तथा करनी की रहनी का समय अब आ गया था इसलिए पहले स्वयं कहनी दिखलाई भी फिर उसका प्रायश्चित भी स्वयं बिरह के रूप में करवाया। जब बिरह की पराकाष्ठा हो गई तो सोचा इस तन को समाप्त कर दूँ और यह तन तो लगभग समाप्त हो ही गया था यदि राज जी ने अपना जोश और इश्क देकर इन्द्रावती को न संभाला होता - जोश और इश्क राज जी की मेहर के बिना प्राप्त नहीं हो सकते तो रहनी जोश और इश्क के बिना संभव नहीं है। इन्द्रावती ने जब विरह के रूप में करनी कर दिखलाई तो अपने तन को समाप्त करने के लिए कदम भी उठाया यही रहनी है जिस के कारण राजजी ने जोस और इस्क बकसीस में दिया।

"जोस हाल और इस्क, न आवे फैल हाल बिन।
सो फैल हाल हक के, बकसीस न पाया किन।।"

५/१२ खिलवत

तो सुन्दरसाथ जी - परमधाम के पच्चीस पक्षों की चितवनी ही हमें अक्षरातीत के भीतर मौजूद आठों रस जो खिलवत के है - उन का रसास्वादन करवा सकती है - इसके अतिरिक्त रहनी इन नाबूद तनों में लाने का कोई और विकल्प दिखाई नहीं देता। राजजी का नूरी स्वरूप और सिनगार ही हमें कौल-फैल से हाल की ओर बढ़ने को प्रेरित करता है क्योंकि इस संसार में राजजी के सुकोमल-सनकूल स्वरुप का आकर्षण ही रुह के नैन खोल सकता है - और रूह के नैन खुले बिना हाल की स्थिति आना असम्भव ही है।

कौल-फैल-हाल हमारी जागनी की तीन अवस्थाएं हैं - यदि हम संक्षेप में इनका विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि जुबां से कहा गया अथवा सार रूप में प्रति दिन जो कुछ भी हम ग्रहण करते हैं यदि वह वाणी मय है अथवा बीतक प्रायोजित है तो यह हुआ हमारा सत्य कौल-और जो कुछ भी हम कह अथवा सुन रहे हैं उसे प्रेक्टीकल कर भी रहे हैं अथवा हम हादी के कदमों पर कदम रख कर निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं तो यह है हमारी फैल की स्थिति - चितवनी का आरम्भ भी फैल की स्थिति में होगा और इससे मिलने वाला आनन्द हमें आगे ही आगे बढ़ने की प्रेरित करेगा - क्योंकि हमारा लक्ष्य है अपने निजानन्द को प्राप्त करना इसीलिए हाल की स्थिति जो कि मंजिल है उसे पाने के लिए हमें आगे ही आगे निरन्तर बढ़ते जाना है। चितवनी से प्राप्त होने वाला आनन्द

Nijanand App

ही कौल-फैल-हाल में सामंजस्य स्थापित करेगा तत्पश्चात आत्म जाग्रति की यह तीनों स्थितियां एक हो जायेंगी - कौल-फैल का विश्राम है इन दोनों का हाल की स्थिति में आना यही कारण है कि कौल-फैल-हाल की एक रूपता में केवल हाल के दर्शन होते हैं। और यही है हमारी मंजिल हमारा विश्राम .....

प्रणाम जी

कान्ता भगत, दिल्ली

संवेदना

श्री निजानन्द आश्रम, रतनपुरी के प्रति पूर्णतयः समर्पित श्री सुरेन्द्र निजानन्दी लुधियाना के पूज्यनीय पिता श्री हँसराज की गिरधर का एक सड़क दुर्घटना में दि० ७.११.२००१ को धाम गमन हो गया। श्री हँसराज जी धार्मिक संस्कारों से युक्त एक निष्ठावान व्यक्तित्व थे। धाम-दर्शन परिवार उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र निजानन्दी, पुत्र वधू-श्रीमती सरिता निजानन्दी पौत्र-वतन निजानन्दी एवं उनकी बेटियों और दामाद अनीता-देवेन्द्र मिढ्ढ़ा, कविता-दर्शन भगत व ममता-वीरेन्द्र कालड़ा के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है और राजजी महाराज से अर्जी करता है कि वे निजअंगना को अपने चरणों में लें एवं शोकाकुल परिवार को इस असीम दुख को सहनें की शक्ति प्रदान करें।

धामदर्शन

संवेदना

श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित ८२ वर्षीय पूज्य माता श्रीमती राम प्यारी नारंग ४७६/६ रामपुरा देहली का दिनांक २ नवम्बर २००१ को धाम गमन हो गया। न कोई कष्ट सहा और न किसी से कोई सेवा ली और बस ध्यान मग्न होकर श्री चरणों में पहुंच गईं।

श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट व धाम-दर्शन परिवार उनके आज्ञाकारी, धर्म व समाज से जुड़े हुये बेटे/ बहुओं सर्वश्री बूटा सिंह नारंग - श्रीमती दर्शना नारंग, जगदीश लाल नारंग-श्रीमती कमलेश नारंग और हम सब के विशेष लाडले परशोतम नारंग - श्रीमती सरोज नारंग व समस्त नारंग परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं और पूज्य माँ के चरणों में श्रद्धा प्रणाम करते हैं।

धाम दर्शन

Nijanand App